प्रथम अध्यक्षता और भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, मई 2012

प्रथम अध्यक्षता संदेश, मई 2012

जीवन की दौड़

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

हम कहां से आए थे ? हम यहां क्यों हैं ? इस जीवन के बाद हम कहां जाते हैं ? इन व्यापक प्रश्नों को अनुत्तरित नहीं रहना चाहिए ।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, आज सुबह मैं आपसे अनंत सच्चाइयों के विषय में बात करूंगा---वे सच्चाइयां जो हमारे जीवनों को समृद्ध करेंगी और हम घर सुरक्षित पहुंचेंगे ।

सब जगह, लोग जल्दी में रहते हैं । जेट विमान अपने बेशकीमती यात्रियों को तेजी से महाद्वीपों और विस्तृत सागरों के पार उढ़ा ले जाते हैं ताकि व्यापारिक सभाओं में समय पर पहुंचा जा सके, काम पूरे किए जा सकें, छुट्टियों का आनंद लिया जा सके, या परिवार से मुलाकात की जा सके । सड़कों पर ---हाईवेज, फ्रीवेज, थ्रूवेज और मोटर वेज, सभी जगह----लाखों गाड़ियां, लाखों लोगों से भरी, कभी न खतम होने वाली धारा के समान दौड़ती हैं और बहुत से कारणों में हमें प्रतिदिन काम पर जाने की जल्दबाजी होती है ।

इस तेजी से दौड़ते जीवन में क्या हम कभी कुछ क्षण चिंतन करने के लिए रूकते हैं---कभी अनंत सच्चाइयों के विषय में सोचते हैं ?

जब अनंत सच्चाइयों से इनकी तुलना की जाती है, तब प्रतिदिन के जीवन के अधिकत्तर प्रश्न और चिंताएं सचमुच में बहुत साधारण लगते हैं । हम रात को खाने पर क्या खाएंगे ? बैठक में कौन सा पेंट करना है ? क्या जोनी को सॉकर में भाग लेना चाहिए ? ये प्रश्न और इन्हीं के समान अन्य प्रश्न अपना महत्व खो देते हैं जब संकट का समय आता है, जब किसी प्रियजन को नुकसान पहुंचता या चोट लगती है, अच्छे भले घर में बीमारी आती है, जब जीवन की ज्योति मंद पड़ने लगती है और अंधकार छाने लगता है । हमारे विचार केंद्रीत हो जाते हैं, और हम बहुत सरलता से समझने लगते हैं वास्तव में क्या महत्वपूर्ण और क्या मामूली है ।

मैं हाल ही में एक महिला से मिला था जो दो साल से जान-लेवा बीमारी से लड़ रही है । उसने बताया था कि उसकी बीमारी से पहले, उसके दिन कामों से भरे थे जैसे घर को अच्छी तरह साफ करना और इसे सुंदर वस्तुओं से सजाना । वह हफ्ते में दो बार अपने हेअर ड्रैसर के पास जाती और पैसा खर्च करती थी और हर महिने नए कपड़े लेती थी । उसके नाती-पोतों को कभी-कभार ही निमंत्रण दिया जाता था, क्योंकि वह हमेशा सोचती थी छोटे और लपरवाह हाथ उन वस्तुओं को, जिन्हें वह बेशकीमती सोचती थी, तोड़-फोड़ या नुकसान पहुंचा सकते हैं ।

और फिर उसे चौंकाने वाला समाचार मिला कि उसका नश्वर जीवन संकट में है और कि उसके पास यहां बहुत कम समय बचा है । उसने कहा कि जिस क्षण डॉक्टर ने उसे बीमारी के बारे में बताया, उसे तुरंत पता चल गया कि जो कुछ भी समय उसके पास बचा है वह अपने परिवार और मित्रों के साथ बिताएगी और सुसमाचार को अपने जीवन के बीच में रखेगी, क्योंकि उसके लिए ये बातें बहुत कीमती थी ।

स्पष्टता के ऐसे समय हम सब के पास कभी न कभी आते हैं, यद्यपि हमेशा इतनी नाटकीय परिस्थितियों में नहीं आते । हम स्पष्टरूप से देख सकते हैं कि हमारे जीवन में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है और हमें किस प्रकार जीवन जीना चाहिए ।

उद्धारकर्ता ने कहा थाः

"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं ।

"परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते हैं और न चुराते हैं :

"क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा ।" [1]

हमारे गहनत्तम चिंतन या महानत्तम जरूरत के समय, मनुष्य का प्राण, जीवन के महानत्तम प्रश्नों के उत्तर पान के लिए स्वर्ग की ओर जाता हैः *हम कहां से आएं हैं ? हम यहां क्यों हैं ? इस जीवन को छोड़ने के बाद हम कहां जाएंगे ?*

इन प्रश्नों के उत्तर को, पढ़ाई की किताबों में या इंटरनेट में नहीं पाया जा सकता है । ये प्रश्न नश्वरता से आगे ले जाते हैं । ये अनंतकाल में समाए हैं ।

हम कहां से आएं हैं ? हर मनुष्य इस प्रश्न को अवश्य ही सोचता है, बेशक बोला न जाता हो ।

प्रेरित पौलुस ने अरियुपगुस के पर्वत पर कहा था कि "हम परमेश्वर के वंश हैं ।"[2]
जबकि हम जानते हैं कि हमारे शारीरिक शरीर हमारे नश्वर माता-पिता की संतान हैं, हमें पौलुस के कथन के अर्थ की चांज करनी चाहिए । प्रभु ने घोषणा की थी कि "आत्मा और शरीर मनुष्य के प्राण हैं ।"[3] इस प्रकार यह आत्मा परमेश्वर की संतान है । इब्रानियों का लेखक उसे "आत्माओं के पिता"[4] कहता है । मनुष्यों की आत्मा सचमुच में उससे "उत्पन्न बेटे और बेटियां हैं ।"[5]

हम देखते हैं कि प्रेरित कवियों ने, इस विषय पर हमारे चिंतन के लिए, मर्मस्पर्शी संदेश और उत्कृष्ट विचार लिखें हैं । विलियम वर्डसवर्थ ने इस सच्चाई को लिखाः

हमारा जन्म कुछ नहीं एक नींद और भूलना है ;

आत्मा जो हमारे साथ बढ़ती है, हमारे जीवन का तारा है,
कहीं और जाना है,
और बहुत दूर से आया हैः
सबकुछ भूल जाने में नहीं,
और न ही पूर्ण नग्नपन में,
लेकिन इधर-उधर घुमते बादलों से हम आए हैं
परमेश्वर से, जोकि हमारा घर हैः
हमारे बचपन में स्वर्ग हमारे आस-पास रहता है ! [6]

माता-पिता सीखाने, प्रेरणा देने, मार्गदर्शन करने, निर्देशन और उदाहरण रखने की अपनी जिम्मेदारी पर मनन करते हैं । और जब कि माता-पिता सोचते हैं, बच्चे---विशेषकर युवा---ये प्रश्न पूछते हैं, ''हम यहां क्यों हैं ?'' अक्सर, यह खामोशी में आत्मा से बोला जाता है और कहा जाता है, ''*मैं* यहां क्यों हूं ?''

हमें उस बुद्धिमान सृष्टिकृता का कितना आभारी होना चाहिए जिसने पृथ्वी को बनाया और हमें अपने पिछले अस्तित्व की याद को हटाकर यहां रखा ताकि हम समय की परिक्षा, अपने को साबित करने का मौका, का अनुभव करें, उस सब को पाने के योग्य बने, जो उसने हमें देने के लिए बनाया है ।

स्पष्टरूप से, पृथ्वी पर होने का हमारा मुख्य उद्देश्य मांस और हड्डी का बना शरीर पाना है । हमें चुनने की स्वतंत्रता का उपहार भी दिया गया है । हजारों तरीकों से हम अपने लिए चुनाव कर सकते हैं । यहां पर हम अनुभव के कठोर स्वामी से सीखते हैं । हम भलाई और बुराई के बीच में पहचान करते हैं । हम कड़वे और मीठे के बीच अंतर करते हैं । हम सीखते हैं कि हमारे कामों के साथ उनके परिणाम जुड़े हैं ।

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके हम, उस ''स्थान'' के योग्य बनते हैं जिसके विषय में यीशु ने कहा था : मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं । ... मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं ... कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो ।'' [7]

यद्यपि हम ''महिमा के बादलों से होकर'' नश्वरता में आते हैं, जीवन निरंतर आगे बढ़ता रहता है । बचपन के बाद युवास्था आती है, और परिपक्वता बिना बताए आ जाती है । जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए हम अनुभव से मदद के लिए स्वर्ग से संपर्क करना सीखते हैं ।

परमेश्वर, हमारे पिता, और यीशु मसीह, हमारे प्रभु, ने निपुणता के मार्ग को चिन्हित किया है । उन्होंने अनंत सच्चाई तक पहुंचने और निपुण होने के लिए, जैसे वे निपुण हैं, हमें मार्ग दिखाया है । [8]

प्रेरित पौलुस ने जीवन की तुलना दौड़ के साथ की है । इब्रानियों को उसने कहा था, ''उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें । [9]

हम अपने जोश में समोपदेशक से सलाह को अनदेखा न करें : ''न तो दौड़ में वेग से दौड़ने वाले और न युद्ध में शूरवीर जीतते ।'' [10]
असल में, ईनाम उसे मिलता है जो अंत तक धीरज धरता है ।

जब मैं जीवन की दौड़ पर विचार करता हूं, मैं दूसरी प्रकार की दौड़ के विषय में सोचता हूं, अपने बचपने के दिनों से । जब मैं 10 वर्ष का था, मेरे मित्र और मैं हाथ में चाकू लेते और, मुलायम लकड़ी वाले सरई के पेड़ से, छोटी नाव बनाते । तिकोने आकार का कपड़े की पाल लगाते, प्रत्येक अपनी अधुरी नाव को यूटाह की प्रोवो नदी की तेज धारा में दौड़ लगाने के लिए उतार देते । हम नदी के किनारे के साथ-साथ भागते और छोटी नावों को तेज उफनती लहर में हिचकोले खाते देखते और कभी गहरे पानी पर शांत भाव से तैरते देखते ।

ऐसी एक दौड़ के दौरान, हम ने देखा कि एक नाव बाकी सबसे आगे निकल कर समाप्ति रेखा की ओर जा रही थी । अचानक, एक धारा इसे एक बड़े भंवर के निकट ले गई, और नाव एक तरफ से उठ गई और उलटी हो गई । गोल-गोल चक्कर लगाती रही, वह मुख्य धारा में वापस नहीं आ पाई । अंत में वह असुरक्षित मंजिल पर पहुंची, उसके टुकड़े चारों ओर बिखरे पड़े थे, हरी काई में जकड़ हुए ।

बचपन की खिलौने की नावों में स्थिरता के लिए कोई पैंदा नहीं था, दिशा देने के लिए पतवार नहीं थी, शक्ति का कोई स्रोत नहीं था । अवश्य ही, उनके लक्ष्य प्रवाह---कम प्रतिरोध का मार्ग के साथ बहना था ।

खिलौने की नावों से भिन्न, हमारे पास हमारी यात्रा का मार्गदर्शन करने के लिए दिव्य गुण हैं । हम नश्वरता में जीवन की बहती धारा के साथ बहने के लिए प्रवेश नहीं करते लेकिन सोचने, सूझ-बूझ, और लक्ष्य पाने की शक्ति के साथ प्रवेश करते हैं ।

हमारा स्वर्गीय पिता हमें बिना उन साधनों को दिए, जो सुरक्षित वापस लौटने में हमें उससे मार्गदर्शन प्राप्त करा सकते हैं, हमारी अनंत यात्रा में नहीं उतारता । मैं प्रार्थना के विषय में बोलता हूं । मैं शांत धीमी आवाज की फुसफुसाहट के बारे में भी बोलता हूं; और मैं पवित्र धर्मशास्त्रों को भी अनदेखा नहीं करता, जिसमें प्रभु के वचन और भविष्यवक्ताओं के वचन शामिल हैं---हमें सफलतापूर्वक समापन रेखा को पार करने में मदद के लिए ।

अपने नश्वर मिशन की कुछ अवधि के दौरान, लड़खड़ाते कदम, फीकी मुस्कान, बीमारी की पीड़ा---धूमिल होती गरमी, नजदीक पहुंचता पतझड़, सरदी की ठंड महसूस होती है, और वह अनुभव होता है जिसे हम मृत्यु कहते हैं ।

प्रत्येक विचार शील व्यक्ति ने अपने आपसे वह प्रश्न पूछा है जो सबसे बेहतर अतीत के अय्यूब ने पूछा थाः ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा ?'' [11] इस प्रश्न को अपने विचारों से दूर करने का हम चाहे जितना भी प्रयास कर लें, यह हमेशा लौटकर आता है । मृत्यु संपूर्ण मनुष्य जाति को आती है । यह वृद्ध लोगों को आती है जो लड़खड़ाते कदमों से चलते हैं । इसकी पूकार उनके द्वारा सुनी जाती है जो मुश्किल से जीवन की यात्रा में आधे रास्ते तक पहुंचे हैं, और अक्सर यह छोटे बच्चों की खिलखिलाहट को शांत कर देती है ।

लेकिन मृत्यु के पश्चात का अस्तित्व क्या है ? क्या मृत्यु सबकुछ का अंत है ? रोबर्ट बलैचफोर्ड, अपनी किताव *God and My Neighbor* में ईसाइयों द्वारा अपनाए विश्वासों जैसे परमेश्वर, मसीह, प्रार्थना, और विशेषकर अमरत्व पर जोर दार प्रहार किया था । उसने निडरतापूर्वक कहा था मृत्यु हमारे अस्तित्व का अंत है और कोई भी इसे गलत साबित नहीं कर सकता । तभी एक आश्चर्यजनक घटना हुई । उसके संदेह की दीवार अचानक चरमराकर ढह गई । वह अनावृत और निसहाय हो गया । धीरे-धीरे उसे विश्वास के उस मार्ग पर लौटना पड़ा जिनका उसने मजाक उड़ाया और उसे छोड़ दिया था । किस बात ने उसमें इतना बड़ा बदलाव किया था ? उसकी पत्नी मर गई थी । टूटे हृदय से वह उस कमरे में गया जहां उसकी पत्नी का मृत शरीर पड़ा था । उसने फिर से उस चहेरे की ओर देखा जिसे वह बहुत प्यार करता था । कमरे से बाहर आते हुए, उसने मित्र से कहाः ''यह वही है, लेकिन फिर भी वह नहीं है । सबकुछ बदल गया है । कुछ जो पहले था चला गया है । वह वैसी नहीं है । प्राण के सिवाय और क्या जा सकता था ?''

बाद में उसने लिखाः ''मृत्यु वह नहीं जिसकी कुछ लोग कल्पना करते हैं । यह केवल एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने के समान है । उस कमरे में हमें ... प्रिय स्त्री और पुरूष और प्यारे बच्चे मिलेंगे जिन से हमने प्यार किया और खो दिया ।'' [12]

मेरे भाइयों और बहनों, हम जानते हैं कि मृत्यु अंत नहीं है । यह सच्चाई भविष्यवक्ता युगों से सीखाते आ रहे हैं । यह हमारे पवित्र धर्मशास्त्रों में भी मिलती है । मॉरमन की पुस्तक में हम विशेष और दिलासा देने वाले शब्दों को पढ़ते हैं :

''अब, मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच में आत्मा की दशा से संबंधित--देखो, इसकी जानकारी मुझे दूत द्वारा दी गई है, कि इस नश्वर शरीर से अलग होने के शीघ्र पश्चात, सारे मनुष्यों की आत्माएं चाहे वे अच्छी हों या बुरी, उस परमेश्वर के पास ले जायी जाती हैं जिसने उन्हें जीवन दिया था ।

''और फिर ऐसा होगा, कि धार्मिक लोगों की आत्माओं को प्रसनंता की दशा में रखा जाएगा, जिसे स्वर्गधाम कहते हैं, आराम की एक दशा शांति की एक दशा, जहां वे अपने सारी परेशानियों, सारी जिम्मेदारियों, और सारे दुखों से आराम करेंगे ।''[13]

उद्धारकर्ता को सलीब चढ़ाए जाने और उसके शरीर को तीन दिनों के लिए कब्र में रखने के बाद, आत्मा फिर से उसमें प्रवेश कर गई । पत्थर लुढ़काकर हटा दिया गया और पुनरूत्थारित मुक्तिदाता, मांस और हड्डी के अमर शरीर को धारण किए, चलने-फिरने लगा था ।

अय्यूब के प्रश्न का उत्तर, ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा ?'' उस समय आया जब मरियम और अन्य लोग कब्र पर पहुंचे थे और चमकीले वस्त्रों में दो व्यक्तिों को वहां देखा जिसने उनसे कहाः ''तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढती हो ? वह यहां नहीं, परन्तु जी उठा है ।''[14]

मसीह की कब्र पर विजय के कारण, हम सब पुनःजीवित होंगे । यह प्राण की मुक्ति है । पौलुस लिखता हैः ''स्वर्गीय देह हैं ...और पार्थिव देह भी हैंः परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और हैं, पार्थिव का और ।'' [15]

यह सिलेस्टियल महिमा है जिसे पाने का हम प्रयास करते हैं । यह परमेश्वर की उपस्थिति है जहां हम रहने की अभिलाषा करते हैं । यह हमारा अनंत परिवार है जिसकी सदस्यता हम चाहते हैं । ऐसी आशीषों को जीवनकाल में प्रयास करने, खोजने, पश्चाताप करने और सफल होने के द्वारा कमाया जाता है ।

हम कहां से आए थे ? हम यहां क्यों हैं ? इस जीवन के बाद हम कहां जाते हैं ? इन व्यापक प्रश्नों को अनुत्तरित नहीं रहना चाहिए । मैं अपने प्राण की गहराइयों और बहुत विनम्रता से गवाही देता हूं कि जिन बातों के बारे में मैंने बोला है वे सच हैं ।

हमारा स्वर्गीय पिता उनके लिए आनंदित होता है जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं । उसे खोए हुए बच्चों की भी चिंता है, वह सुस्त किशोर, जिद्दी युवा, भटके हुए माता-पिता । प्यार से स्वामी इन से और अवश्य ही सब से कहता है : ''वापस आओ । चले आओ । घर आ जाओ । मेरे पास आओ ।''

अगले हफ्ते में हम ईस्टर मनाएंगे । हमारे विचार उद्धारकर्ता के जीवन, उसकी मृत्यु, और उसके पुनरूत्थान की ओर मुड़ जाएंगे । उसके विशेष गवाह के रूप में, मैं आपको गवाही देता हूं कि वह जीवित है और कि वह हमारी सफल वापसी की प्रतिक्षा कर रहा है । हमारी वापसी वैसी ही होगी, मैं उसके ---यीशु मसीह हमारे उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता के पवित्र नाम में प्रार्थना करता हूं, आमीन ।

विवरण

1.मती **6:19–21** ।

2.प्रेरितों के काम **17:29** ।

3.सिद्धांत और अनुबंध **88:15** ।

4.इब्रानियों **12:9** ।

5.सिद्धांत और अनुबंध **76:24** ।

6.William Wordsworth, ***Ode: Intimations of Immortality from Recollections of Early Childhood*** **(1884), 23–24** ।

7.यूहन्ना **14:2–3** ।

8.देखें मती 5:48; 3 नफी 12:48।

9.इब्रानियों 12:1।

10.समोपदेशक 9:11।

11.अय्यूब 14:14।

12.देखें Robert Blatchford, *More Things in Heaven and Earth: Adventures in Quest of a Soul* (1925), 11।

13.अलमा 40:11–12।

14.लूका 24:5–6।

15.1 कुरिन्थियों 15:40–42।.

© 2012 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। भारत में छपी। अंग्रेजी अनुमतिः 6/11।

अनुवाद अनुमतिः 6/11। First Presidency Message, May 2012 का अनुवाद। Hindi। 10365 294

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

प्रत्येक माह के चौथे रविवार पर मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था सभाएं, ''हमारे समय के लिए शिक्षाएं'' के लिए समर्पित रहना जारी रहेंगी। प्रत्येक पाठ हाल की जनरल सम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं में से तैयार किया जा सकता है (नीचे चार्ट देखें)। स्टेक और जिला अध्यक्ष उन वार्ताओं का चयन कर सकते हैं जिनका उपयोग किया जाना है, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्षों और शाखा अध्यक्षों को दे सकते हैं। मार्गदर्शकों को मलकिसिदक पौरोहित्य भाइयों और सहायता संस्था बहनों को एक ही वार्ता का अध्ययन एक ही रविवार को अध्ययन करने की उपयोगिता पर जोर देना चाहिए।

वे जो चौथे-रविवार पाठ में उपस्थित होते हैं उनसे कक्षा में हाल की जनरल सम्मेलन की पत्रिका की प्रति लाने के लिए उत्साहित किया जाता है।

वार्ताओं से पाठ तैयार करने के लिए सुझाव

प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा वार्ता(ओं) का अध्ययन करते और सीखाते समय आपके साथ होगी। पाठ की तैयारी करते समय आपके मन में अन्य सामग्रियों का उपयोग करने का विचार आएगा, लेकिन सम्मेलन वार्ताएं ही स्वीकृत पाठयक्रम हैं। आपका कार्यभार गिरजे की हाल के जनरल सम्मेलन में सीखाए सुसमाचार को सीखने और जीने में दूसरों की मदद करना है।

वार्ता(ओं) की समीक्षा करें, उन नियमों और सिद्धांतों की खोज करें जो कक्षा के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करती है। कहानियों, धर्मशास्त्र संदर्भो, और वार्ताओं के कथनों की खोज करें जो आपको इन सच्चाइयों को सीखाने में मदद करेंगे।

नियमों और सिद्धांतों को सीखाने के लिए एक रूप-रेखा बनाएं। आपकी रूप-रेखा में वे प्रश्न शामिल होने चाहिए जो कक्षा के सदस्यों की मदद करेंगे : वार्ता(ओं) में नियमों और सिद्धांतों की खोज करें।

उनके अर्थ के बारे में विचार करें।

समझ, विचार, अनुभवों, और गवाहियों को बांटे।

इन नियमों और सिद्धांतों को उनके जीवन में लागू करें।

चौथा-रविवार पाठ सामग्री

महिने पाठ सीखाए जाते हैं

अप्रैल 2012- अक्टूबर 2012

अप्रैल 2012 जनरल कांफ्रैंस में दी गई वार्ताएं *

अक्टूबर 2012-- अप्रैल 2013

अक्टूबर 2012 जनरल कांफ्रैंस में दी गई वार्ताएं *

अप्रैल और अक्टबूर के चौथे रविवार पाठों के लिए, वार्ता(एं) पिछली या हाल ही में हुई जनरल कांफ्रैंस से चुनी जा सकती हैं। वार्ताएं कई भाषाओं में conference.lds.org पर उपलब्ध हैं।

भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, मई 2012

चढ़ने के लिए पहाड़

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा

प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

यदि हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, तो जीवन के कठीनत्तम के साथ-साथ सरलत्तम समय भी आशीष हो सकते हैं ।

मैंने कांफ्रैंस के एक सत्र में अध्यक्ष स्पेनसर डब्ल्यू. किंबल को कहते सुना था कि परमेश्वर उन्हें पार करने के लिए पहाड़ दे । उन्होंने कहाः ''हमारे सामने बहुत सी चुनौतियां है, बहुत से मौके हैं । मैं प्रभु से विनम्रता से कहने कि उस उत्साहजनक भरोसे और अनुभूति का स्वागत करता हूं, 'मुझे वह पार करने के लिए वह पहाड़ दे,' मुझे ये चुनौतियां दे ।'' 1

मेरा ह्रदय यह जानकर प्रभावित हुआ कि बहुत सी चुनौतियां और कठिनाइयों का सामना वह पहले ही कर चुके थे । मैंने उनके समान परमेश्वर का एक सहासी सेवक बनने की इच्छा को महसूस किया । तो एक रात मैंने अपने साहस की परिक्षा करने के लिए प्रार्थना की । मुझे बहुत अच्छी तरह याद है । उस शाम मैंने उस विश्वास के साथ जो मेरे ह्रदय में कूट कूट कर भरा था अपने कमरे में घुटने के बल झुककर प्रार्थना की थी ।

एक या दो दिनों के अंदर मुझे मेरी प्रार्थना का जवाब मिल गया । मेरे जीवन की कठोरत्तम परिक्षा ने मुझे चौंका और विनम्र किया था । उसने मुझे दो तरफा पाठ सीखाया था । पहला, मुझे स्पष्ट सबूत मिल गया था कि परमेश्वर ने विश्वास भरी मेरी प्रार्थना को सुना और जवाब दिया था । लेकिन दूसरा, वह सबक सीखाया जो आज तक जारी है कि उस रात मुझे इतना विश्वास क्यों था कि कठिनाई का सामना करने से इतनी अधिक आशीष मिलती है जो किसी भी नुकसान की भरपाई कर सकता है ।

बहुत पहले जिस कठिनाई का सामना मैंने किया था अब वह उन कठिनाइयों के मुकाबले बहुत छोटी लगती है जिनका सामना मैं और जिन से मैं प्रेम करता हूं वे करते हैं । आजकल, आप में से बहुत से शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक परिक्षाओं का सामना कर रहे हैं जो आपको उसी तरह दुख पहुंचा रही होंगी जैसा एक समय में परमेश्वर के महान और विश्वासी सेवक ने महसूस किया जिन्हें बहुत अच्छी तरह जानता था । उसकी नर्स ने उसे बिसतर पर दुख से कराहते हुए सुना था, ''जब मैंने पूरे जीवन-भर भलाई करने की कोशिश की तो, मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ ?''

आप जानते हैं जेल में भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की प्रार्थना का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया थाः

''और यदि तुम्हें गड्ढे में दकेल दिया जाए, या तुम्हें हत्यारों के हाथों सौंप दिया जाए, और तुम्हें मृत्युदंड दे दिया जाए; यदि तुम्हें गहरे में फैंक दिया जाए; यदि बड़ी भीड़ तुम्हारे विरुद्ध षड़यंत्र रचे; यदि प्रचंड वायु तुम्हारी दुश्मन बन जाए; यदि आसमान पर अंधकार छा जाए, और सभी मिल कर घेर लें; और सबसे बढ़कर, यदि नरक के जबड़े तुम्हें जकड़ने के लिए तुम्हारी ओर बढ़ें, मेरे बेटे, तुम यह जान लो कि ये बातें तुम्हें अनुभव देंगी, और ये तुम्हारी भलाई के लिए होगा ।

''मानव पुत्र ने भी ये सब सहा था । क्या तुम उससे बढ़कर हो ?

''इसलिए, अपने मार्ग पर डटे रहो, और पौरोहित्य सदा तुम्हारे साथ रहेगा; क्योंकि उनके बंधन अटूट हैं, ये खतम नहीं हो सकते हैं । तुम्हारे दिनों की जानकारी है, और तुम्हारे वर्ष का महत्व कम नहीं होगा; इसलिए, भयभीत न हो कि मनुष्य क्या कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर हमेशा हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहेगा । '' 2

इसे अच्छा उत्तर मुझे कोई और नहीं लगता कि परिक्षाएं क्यों आती हैं और जो उस प्रभु के स्वयं के वचन हैं, जिसने इतनी भंयकर कठिनाइयों का सामना किया था जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

आपको उनके वचन याद होंगे जब उन्होंने सलाह दी थी कि हमें विश्वास के साथ पश्चाताप करना चाहिएः

''इसलिए मैं तुम्हें पश्चाताप करने की आज्ञा देता हूं, कहीं ऐसा न हो कि मुझे अपने मुंह की छड़ी के द्वारा, और अपने कोप के द्वारा, और गुस्से के द्वारा, तुम्हें दंड देना पडे, और तुम्हारे कष्ट अधिक दुखदाई हो जाएं---कितने दुखदाई तुम नहीं जानते, कितने तीव्र तुम नहीं जानते, हां, सहने के लिए कितने कठोर तुम नहीं जानते ।

''क्योंकि देखो, मुझ, परमेश्वर ने इन सब बातों को सहा है ताकि, तुम्हें ये सब न सहना पड़े यदि तुम पश्चाताप करते हो;

''लेकिन यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं तब उन्हें मेरे ही समान कष्ट सहना होगा;

''उस कष्ट ने मुझ, परमेश्वर को, जो सबसे महान है, दर्द कारण थरथराने पर मजबूर कर दिया, और रोम रोम से लहू बह निकला था, और शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से कष्ट सहा था--और चाहता था कि मुझ उस कड़वे पियाल में से न पीना पड़े ---

''फिर भी, पिता की महिमा हो, और मैंने मानव संतान के लिए अपनी तैयारी को ग्रहण किया और इसे पूरा किया ।'' 3

आपको और मुझे विश्वास है कि परिक्षाओं पर विजय पाने का मार्ग है भरोसा रखना कि ''गिलाद का बालसन है'' 4 और प्रभु ने वादा किया है,

''मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।''5 यही हमें अध्यक्ष मॉनसन ने सीखाया है कि हमें उनकी मदद करनी है जो परिक्षाओं मे अकेले और घबरा जाते हैं। 6

लेकिन अध्यक्ष मॉनसन ने समझदारी से यह भी सीखाया है कि उन वादों की वास्तविकता में विश्वास का आधार बनने में समय लगता है। आपने उस निर्माण की जरूरत को महसूस किया होगा, जैसे मैंने किया है, किसी के बिस्तर के पास जो अंत तक धीरज धरने में असर्मथ हो जाता है। यदि विश्वास का आधार हमारे हृदयों में नहीं है, तो धीरज धरने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

आज मेरा उद्देश्य उसकी व्याख्या करना है कि कैसे हम उस अटूट आधार को बना सकते हैं जिसे मैं जानता हूं। ऐसा मैं विनम्रता से दो कारणों से करूंगा। पहला, मैं उन्हें निराश कर सकता हूं जो किसी बड़ी परेशानी में फंसे संघर्ष कर रहे हैं और महसूस करते हैं कि विश्वास का आधार नष्ट हो रहा है। और दूसरा, मैं जानता हूं कि मेरे जीवन अभी बहुत से बड़ी परिक्षाएं होनी हैं। इसलिए, जो उपाय मैं बताने जा रहा हूं उसका मेरे जीवन में अंत तक धीरज धरने के लिए अभी साबित किया जाना बाकी है।

युवा के रूप में मैं नए घरों के निर्माण की नींव डालने के ठेकेदार के साथ काम करता था। गरमियों के गर्म मौसम में नींव तैयार करने के लिए सीमेंट डालना बहुत कठीन था। कोई मशीन नहीं थी। हम फावड़ों और कुदाल से काम करते थे। उन दिनों में भवनों के लिए मजबूत नींव डालना कठीन काम था।

इसमें धीरज की भी जरूरत होती थी। जब हमने नींव का सीमेंट डाल देते, हमने उसके सूखने की प्रतिक्षा करते थे। हम चाहते थे काम चलता रहे, ढांचा निकालने से पहले प्रतिक्षा करते थे नींव डालने के बाद सीमेंट सूख जाए।

और अनाड़ी मकान बनाने वाले के लिए नींव को मजबूती देने के लिए ढांचे के बीच में सरीए डालना काम थकाने वाला और बहुत समय लेने वाला लगता था।

इसी तरह, प्रत्येक जीवन में आने वाले तूफानों का सामना करने के लिए हमारे विश्वास के आधार के लिए भी जमीन को सावधानी से तैयार किया जाना चाहिए। विश्वास के उस मजबूत आधार की नींव हमारी व्यक्तिगत ईमानदारी है।

जब हमारे सामने चुनने का समय आता है उस समय निरंतर सही का चुनाव करने से हमारे विश्वास के लिए मजबूत जमीन तैयार होती है। यह बचपन से शुरू हो जाती है क्योंकि प्रत्येक को जन्म के समय से ही मसीह की आत्मा का उपहार मिलता है। उस आत्मा के द्वारा हम जान सकते हैं कि परमेश्वर के सामने क्या सही है और क्या गलत है।

वे चुनाव, अधिकतर दिनों में सैंकड़ों होते हैं, जो हमारे विश्वास की इमारत के लिए मजबूत जमीन तैयार करते हैं। वह धातु का ढांचा जिसके चारों ओर हमारे विश्वास का सीमेंट डाला जाता है, इसके सभी अनुबंधों, धर्मविधियों और नियमों सहित यीशु मसीह का सुसमाचार है।

विश्वास को अंत तक बना रहने के तरीकों में से एक है इसके मजबूत होने के समय को ठीक से जांचना। इसलिए अपने जीवन में इतना शीघ्र ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ने और कठीन परिक्षाओं की प्रार्थना करना मेरे लिए अनुचित था।

समय बीतने के साथ-साथ उस तरह मजबूत होना अपने आप नहीं हो जाता, बल्कि इसके लिए समय लगता है। केवल आयु बढ़ने के साथ ऐसा नहीं होता है। यह संपूर्ण हृदय और प्राण से परमेश्वर और दूसरों की निरंतर सेवा करने से सच्चाई की गवाही अटूट आत्मिक ताकत में बदल जाती है।

अब, मैं उनको उत्साहित करना चाहता हूं जो कठीन परिक्षाओं के बीच फंसे हैं, जो समझते हैं कि उनका विश्वास परेशानियों के बीच फीका हो रहा है। परेशानी अपने आपमें आपके विश्वास को मजबूती देने और अंततः अटूट बनाने का तरीका हो सकती है। मॉरमन की पुस्तक में मॉरमन के बेटे, मरोनी, ने हमें सीखाया है कि आशीर्षे कैसे आती हैं। उसने एक सरल और मधुर सच्चाई सीखाई है कि एक छोटी टहनी जितने विश्वास पर कार्य करने से परमेश्वर को उसका विकास करने में मदद मिलती हैः

''और अब, मैं, मरोनी, इन बातों के विषय में कुछ कहूंगा, मैं संसार को दिखाऊंगा कि विश्वास ऐसे चीज है जिसकी आशा की जाती है वह दिखाइ नहीं देता इसलिए यदि वह दिखाई नहीं देती तब उस पर संदेह मत करो, क्योंकि इसके लिए तुम्हें तब तक साक्षी नहीं मिल सकती जब तक कि तुम्हारे विश्वास की परिक्षा न हो जाए।

''मृत होकर जी उठने के पश्चात विश्वास के कारण ही मसीह ने हमारे पूर्वजों को दर्शन दिया था और उसने अपने आपको तब तक नहीं दिखाया जब तक कि उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया, इसलिए उस पर कुछ लोगों का ही विश्वास था, इसलिए उसने अपने आपको सारे संसार को नहीं दिखाया।

''लेकिन लोगों के विश्वास के करण ही उसने अपने आपको संसार को दिखाया और पिता के नाम को गौरवान्वित किया, और रास्ता तैयार किया जिस पर चल कर दूसरे लोग भी उस दिव्य उपहार को प्राप्त करें जिससे कि वह उन बातों को प्राप्त करने की आशा करें जिन्हें उन्होंने देखा नहीं है। इसलिए तुम भी आशा करो और यदि तुमने विश्वास किया तब तुम भी उस उपहार के हिस्सेदार होओगे। 7

विश्वास का वह कण अति बहुमूल्य है और जिसकी आपको सुरक्षा और जिसका बहुत अधिक उपयोग आपको यीशु मसीह में विश्वास करने में करना चाहिए। मरोनी ने सीखाया था उस विश्वास की शक्ति ही मार्ग है : ''यदि मानव समाज में विश्वास न रहे तब परमेश्वर उनमें कोई चमत्कार नहीं दिखा सकता।'' 8

मैं एक स्त्री से मिला था जिसे कई अकल्पनीय दुखों को सहने की चमत्कारी शक्ति केवल इन सरल शब्दों में मिली थी ''मैं जानती हूं कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है।'' 9 वह विश्वास और गवाही के वे शब्द उसके बचपन की यादों में धुंधले हो गए थे लेकिन अभी भी थे।

मैं यह जानकर चौंक गया कि एक अन्य स्त्री ने उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया जिसने उसके साथ सालों तक गलत किया था । मैं आश्चर्यचकित था और उससे पूछा उसने इतने सालों के दुर्व्यवहार को क्षमा करने और भूल जाने का चुनाव क्यों किया ।

उसने शांति से कहा, ''यह मेरे लिए सबसे कठीन काम था, लेकिन क्योंकि मुझे पता था कि मुझे क्षमा करना चाहिए । इसलिए मैंने क्षमा किया ।'' यदि वह दूसरों को क्षमा करती है तो उद्धारकर्ता उसे क्षमा करेगा उसके इस विश्वास ने उसे शांति की अनुभूति और आशा के लिए तैयार किया, अपश्चातापी व्यक्ति को क्षमा करने के कुछ महिने बाद उसकी मृत्यु हो गई ।

उसने मुझे पूछा था, ''जब मैं वहां जाऊंगी, तो स्वर्ग में कैसा होगा ?''

और मैंने कहा था, ''जितना मैंने विश्वास और क्षमा करने की तुम्हारी क्षमता को देखा है यह तुम्हारे लिए बहुत बढ़िया घर-वापसी होगी ।''

मेरा पास अन्य उत्साह उन लोगों के लिए है जो अभी आश्चर्य करते हैं कि क्या यीशु मसीह में उनका विश्वास अंत धीरज थरने के लिए पर्याप्त होगा । मुझे यह सौभाग्य प्राप्त है कि आप जो लोग सुन रहे हैं मैं उन में से कुछ को मैं तब से जानता हूं जब आप युवा, जोशीले, अपने आस-पास के लोगों से अधिक आशीषित थे, फिर भी आपने उसका चुनाव किया जो उद्धारकर्ता आप से करवाना चाहता था । अपनी बहुतायत में से आपने उन लोगों की मदद और देख-भाल करने के तरीकों को खोज लिया था जिन्हें आपने अपने जीवन में अनदेखा या जिनसे घृणा की थी ।

जब कठीन परिक्षाएं आती हैं, उन्हें अंत तक अच्छी तरह सहने के लिए विश्वास होगा, निमार्ण होता लेकिन आपने ध्यान दिया होगा उस समय नहीं होता जब आप मसीह के शुद्ध प्रेम पर कार्य करते हुए दूसरों की सेवा और क्षमा करते हैं जैसा मसीह ने किया था । आप विश्वास के आधार का निमार्ण करते हैं जब आप उद्धारकर्ता के समान प्रेम और उसके लिए सेवा करते हैं । उसमें आपका विश्वास उदारता के काम की ओर ले जाता है जो तुम्हारे लिए आशा लाता है ।

विश्वास के आधार को मजबूत करने में कभी भी देर नहीं होती । इसके लिए हमेशा समय होता है । उद्धारकर्ता में प्रेम के साथ, आप पश्चाताप और क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकते हो । कोई न कोई अवश्य होता जिसे आप क्षमा कर सकते हैं । आप किसी का धन्यवाद कर सकते हैं । आप किसी की सेवा और ऊपर उठा सकते हैं । आप इसे जहां कहीं आप हैं वहां कर सकते हैं और बेशक आप कितने अकेले और खालीपन आप महसूस करते हों ।

मैं इस जीवन में आपकी कठीनाइयों का अंत होने का वादा नहीं करता । मैं आपको यह सुनिश्चित नहीं करता है कि आपकी परिक्षाएं कुछ क्षणों की होगीं । जीवन की कठीनाइयों के गुणों में एक है कि लगता कि समय बहुत धीरे गुजर रहा है और फिर रुका हुआ सा लगता है ।

इसके पीछ कुछ कारण हैं । यह जानते हुए कि ये कारण आपको दिलासा नहीं देगें, लेकिन ये आपको धैर्य का एहसास दे सकते हैं । वे कारण केवल एक वास्तविकता से आते हैं : आपके लिए अपने परिपूर्ण प्रेम में स्वर्गीय पिता और उद्धारकर्ता चाहता है कि आप परिवार में हमेशा रहने के लिए उपयुक्त हों । केवल वही जो पूर्णरूप से यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा शुद्ध किए जाते हैं वहां रह सकते हैं ।

मेरी मां ने 10 साल तक कैंसर का सामना किया था । इलाज और अप्रैशन और अंततः अपने बिस्तर में बंध जाना उनकी परिक्षाओं में से कुछ थे ।

मुझे याद है जब मेरे पिता ने उन्हें अंतिम सांस लेते हुए देख कर कहा था, ''एक छोटी लड़की अपने घर आराम करने चली गई है ।''

उनकी अंतेष्टि में वक्ताओं में से एक अध्यक्ष स्पेसर डब्ल्यू. किंबल थे । मुझे याद है, अपनी श्रद्धांजलि में उन्होंने कहा था : ''आप में से कुछ सोचते हैं कि माइल्डरेड ने इतना लंबा और अधिक दुख सहा क्योंकि उन्होंने कुछ गलत किया था जिसके लिए परिक्षा चाहिए थी ।'' फिर उन्होंने कहा था, ''नहीं, परमेश्वर उन्हें थोड़ा और अधिक चमकाना चाहता था ।'' उस समय मैंने सोचा था, ''यदि इतनी भली स्त्री को इतना अधिक चमकाने की जरूरत हो सकती है, तो मेरा क्या होगा ?''

यदि हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जीवन के कठीनत्तम के साथ सरलत्तम समय भी आशीष हो सकते हैं । हर परिस्थितियों में, हम आत्मा के मार्गदर्शन में सही करने का चुनाव कर सकते हैं । हमारे जीवन को आकार और मार्गदर्शन करने के लिए यीशु मसीह का सुसमाचार है यदि हम इसे चुनते हैं । और भविष्यवक्ताओं द्वारा उद्धार की योजना में हमारी स्थिति स्पष्ट करने से, हम परिपूर्ण आशा और शांति की अनुभूति के साथ रह सकते हैं । हम कभी महसूस नहीं करते कि प्रभु ने हमें अकेला छोड़ दिया या प्रेम नहीं करता क्योंकि कभी ऐसा नहीं होता है । हम परमेश्वर के प्रेम को महसूस कर सकते हैं । उद्धारकर्ता ने हमारे बांइ ओर और हमारे दांई ओर स्वर्गदूत भेजने का वादा किया है । 10 और वह हमेशा अपने वादे को पूरा करता है ।

मैं गवाही देता हूं कि पिता परमेश्वर जीवित है और कि उसका प्रिय पुत्र हमारा मुक्तिदाता है । पवित्र आत्मा इसकी पुष्टि करती है जब आप इस कांफ्रैंस में खोजते, सुनते, और बाद में प्रभु के अधिकृत सेवकों, जोकि यहां हैं, के संदेशों को पढ़ते हैं । अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन समस्त संसार के लिए प्रभु के भविष्यवक्ता हैं । प्रभु आपकी ध्यान रखते हैं । पिता परमेश्वर जीवित हैं । उनका प्रिय पुत्र, यीशु मसीह, हमारा मुक्तिदाता, जीवित है । उसका प्रेम सदा के लिए है । मैं यह गवाही यीशु मसीह के नाम में देता हूं, आमीन ।

विवरण

1. Spencer W. Kimball, “Give Me This Mountain,” *Ensign,* Nov. 1979, 79।

2.देखें सिद्धांत और अनुबंध 122:7–9।

3.देखें सिद्धांत और अनुबंध 19:15–19।

4.यिर्मयाह 8:22।

5.यहोशू 1:5।

6.देखें Thomas S. Monson, “Look to God and Live,” *Ensign,* मई 1998, 52–54।

7.ईथर 12:6–9।

8.ईथर 12:18।

9. “I Know That My Redeemer Lives,” *Hymns,* no. 136।

10.देखें सिद्धांत और अनुबंध 84:88।

© 2012 Intellectual Reserve, Inc.
द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। भारत में छपी। अंग्रेजी अनुमतिः 6/11। अनुवाद अनुमतिः 6/11। Visiting Teaching Message, May 2012 का अनुवाद। Hindi। 10365 294